Volume-08
Issue-01
January-2021

ISSN: 2349-7637 (Online)
RESEARCH HUB International Multidisciplinary Research Journal
https://rhimrj.co.in/ [Peer-Reviewed Journal]

गुलरा के बाबा का शैलीवैज्ञानिक अध्ययन

कुलदीप कुमार मौर्य

शोधार्थी, हिंदी विभाग, राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय, अजमेर

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 15 January 2021

Keywords
शैली, चयन, विचलन, समानान्तरता, अप्रस्तुत विधान।

ABSTRACT

हिंदी कथा साहित्य में कथाकार मार्कण्डेय एक सशक्त रचनाकार रहे हैं। उनकी कहानियाँ हिंदी कथा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। मार्कण्डेय भाव एवं भाषा के गंभीर लेखक हैं। उनकी कहानियाँ भारतीय परिवारों के जीवन शैली और उनके परिवेश का विश्लेषण करती हैं। जिनमें आम आदमी तथा मध्यवर्गीय परिवार की कथा–व्यथा है। इनकी कहानियों में संघर्ष और मोहभंग का नजारा भी देखने को मिलता है। मार्कण्डेय की भाषा शैली अनुकूल और आकर्षक होने के कारण उनकी कहानियाँ हिंदी कथा साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त कर चुकी हैं। यहाँ पर हम उनकी कहानी 'गुलरा के बाबा' जो कि उनकी पहली कहानी है और उनके कहानी संग्रह 'पानफूल' की चर्चित कहानी भी है। यह कहानी ग्रामीण परिवेश को हुबहू चित्रित करती है। यहाँ पर हम इसी कहानी 'गुलरा के बाबा' की बात कर रहे हैं। यह कहानी परिवेश, भाव, भाषा तथा शैली की अभिव्यंजना को अपने अंदर समेटे हुए है।

हिंदी में 'शैली' शब्द का प्रयोग अंग्रेजी के स्टाइल (Style) के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है। संस्कृत में शैली के अर्थ को तलाशने पर हमें निम्नलिखित अर्थ प्राप्त होते हैं–"लिखने का ढंग, वाक्य रचना के प्रकार, चाल, ढंग, परिपाटी, तर्ज आदि।"[1] विद्यानिवास मिश्र ने "शैली के स्थान पर 'रीति' शब्द का प्रयोग किया है।"[2] डॉ. नगेंद्र ने रीति शब्द के प्रयोग संदर्भ में अपना मत व्यक्त करते हुए 'शैली' नाम को व्यवहारिक मान्यता प्रदान की है।"[3] लेखक की प्रतिष्ठा उसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति पर आधारित होती है। इन दोनों आधारों से प्रस्तुत होने वाला रूप ही शैली होता है। इस बात को ध्यान में रखकर पाश्चात्य विद्वानों ने "शैली को रचनाकार के मस्तिष्क की सच्ची प्रतिलिपि स्वीकार किया है।"[4] जिस प्रकार मनुष्य के व्यक्तित्व की संकल्पना उसके शरीर से जुड़ी होती है ठीक उसी प्रकार शैली की संकल्पना भाषा से जुड़ी हुई होती है। "इस प्रकार शैली की संरचना मूलतः भाषा से जुड़ी है।"[5] शैली के संबंध में डॉ. भोलानाथ तिवारी का मानना है कि "शैली भाषिक अभिव्यक्ति का वह विशेष ढंग है जो प्रयोक्ता के व्यक्तित्व तथा विषय से सम्बद्ध होता है तथा जो चयन, विचल, सुसंयोजन, समानांतरता और अप्रस्तुत विधान आदि सामान्य अभिव्यक्ति के लिए और असुलभ उपकरणों पर आधारित होता है।"[6] आलोच्य कहानी 'गुलरा के बाबा' का विवेचन शैलीविज्ञान के प्रतिमानों चयन, विचलन, समानांतरता, तथा अप्रस्तुत विधान के आधार पर विश्लेष्ण करने का प्रयास किया गया है।

चयन–चिंतनशील साहित्यकार को भाषा सौन्दर्य से विशेष लगाव होता है इसी कारण वह साहित्य रचना में चिंतन मनन के पश्चात मन को सौंदर्य प्रधान लगने वाली भाषा की विभिन्न इकाइयों का चयन करता है। "चयन कौशल का वह तत्त्व है जिसके सहारे भाषा की ऐच्छिक विशेषता ही शैली के रूप में उपस्थित होती है। यदि "ग्लीसन भाषा की परिपाटी के द्वारा उपस्थित विकल्पों के भीतर चयन की इस पद्धति को सही कहते हैं तो विंटर भाषा की विकल्पनात्मक वैशिष्ट्य सूची से आवर्तक तौर पर होने वाले चयन को शैली के रूप में देखते हैं।"[7] सामान्य शब्दों में कहें तो चयन का आशय है कई विकल्पों में से एक को लेना। भाषा एवं साहित्य में चयन का विशेष महत्व है। चयन का प्रयोग विभिन्न स्तरों पर किया जाता है जैसे ध्वनि चयन, शब्द चयन, वाक्य चयन, प्रोक्ति चयन, आदि।

शब्द चयन– शब्द चयन के अन्तर्गत तत्सम शब्द, तद्भव शब्द, देशज शब्द आदि आते हैं जो इस प्रकार हैं–

i. **तत्सम शब्दों का चयन**–इस कहानी में तत्सम शब्दों का खूब प्रयोग हुआ है– "उनके उन्नत वक्षस्थल पर बनी हुई कड़ी–कड़ी मांसपेशियाँ और बलिष्ठ भुजाएं जैसे सींक से छू लो तो खून आ जाए।"[8] "जैसे उनके पैरों में पक्षियों वाले पंख जुड़ गए हों।"[9] यहाँ पर दिए गये उदाहरणों में उन्नत, वक्षस्थल, बलिष्ठ, पक्षी, पंख आदि तत्सम शब्द हैं। जिनके प्रयोग से कहानी में गंभीरता आ गई है।

ii. **तद्भव शब्दों का चयन**– लेखक ने गाँव को अपनी कहानी के केंद्र में रखा है जिसकी वजह से उनकी कहानी में तद्भव शब्द बहुतायत मात्रा में मिलते हैं। "चमेलिया बचपन से आती। इस गाँव में फागुन के छै दिन ठाकुर के चबूतरे पर तबला ठनकता ही रह जाता।"[10] "उसने अपनी आँखें तिरछी करते हुए कहा अचूक आँखें थीं नेह से छलछलाई हुई।"[11] यहाँ पर फागुन, छै, चबूतरा, आँख, छलछलाई, नेह आदि तद्भव

शब्द हैं, जो कहानी के ग्रामीण परिवेश को चित्रित करने में लेखक को सफल बनाते हैं।

iii. **देसज शब्दों का चयन**–लेखक का जन्म एक गाँव में हुआ था और वहीं पर उनकी परवरिश हुई थी जिसके कारण उनकी कहानियों में वहीं से गाँव के देशज शब्द भी मिलते हैं। "बाबा नीचे सिर किए हँसे, उरिन नहीं होने की चमेली।"[12] "याद है सुखइया गजब की सिल्ली थी इसकी अभी तक खुत्थियाँ बची रह गई हैं।"[13] "अकेलवा आम कटा था काड़ियाँ चीरी जाने को थीं।"[14] "दोनों लड़के भी वहीं छहाँने लगे।"[15] यहाँ पर दिए गये उदाहरणों में अकेलवा, उरिन, सिल्ली, खुत्थियाँ, काड़ियाँ, छहाँने आदि देसज शब्द हैं, जो कहानी के देसज पृष्ठभूमि को निरुपित करते हैं।

वाक्य चयन–वाक्य रचना शैली का अति महत्वपूर्ण अंग है जब कोई व्यक्ति कोई बात या विचार कहना चाहता है तो वह वाक्यों के रूप में कहता है और उसी रूप में वह हमारे सामने आता है। शैली विश्लेषण की दृष्टि से वाक्य चयन के अनेक स्तर होते हैं–

i. **सरल वाक्यों का चयन**–सरल वाक्यों में एक उद्देश्य तथा एक विधेय होता है। जैसे "फिर वह कर्ज तो है। वह कहकर मुस्कुराई एक मोह भरी मुस्कान की रोशनी बिखर गई। बाबा कपड़े नहीं पहने थे एकाएक ध्यान गया।"[16] यहाँ पर दिए गये वाक्य सरल वाक्य हैं, ऐसे ही अनेक जगहों पर सरल वाक्यों का सफल प्रयोग हुआ है जो कि कहानी की सरलता के प्रतीक बन जाते हैं।

ii. **संयुक्त वाक्यों का चयन**– संयुक्त वाक्यों का प्रयोग कहानी में सामासिकता और ओज लाते हैं जैसे–"लोहार कुछ फुसफुसाया और सब उठकर काम पर चले गए।"[17]

iii. **छोटे वाक्यों का चयन**– छोटे–छोटे वाक्य कहानी के नए पाठकों के लिए अच्छा होता है जो की शैली विज्ञान का एक अंग भी है यथा–"चौतू बाबा को देख कर रुक गया। सलाम ठाकुर। खुश रहो चौतू, लेकिन तुम यह क्या कर रहे हो। सरपत काट रहे हैं ठाकुर। अच्छा कल से मत काटना। ऐसे ही काटूँगा।"[18]

iv. **बड़े वाक्यों का चयन**–कहानी में प्रवाह और गंभीरता लाने के लिए लेखक बड़े वाक्यों का चयन करता है जैसे–"वे गुलरा के बाबा कहे जाते हैं; इतना बड़ा जंगल और बाग उनके ऊपर तो छोड़ रखा है परिवार वालों ने, और यहाँ दस कोस में कौन नहीं जानता इसे...उनका आहत अभिमान नई भाषा में बोला–बुढ़ापे के एहसास के कारण और क्रोध की हल्की गर्मी उनके शरीर में दौड़ गई।"[19]

विचलन–नयापन और रोचकता बनाने के लिए रूढिगत व्यवस्था के स्थान पर नए प्रयोगों को स्थान दिया जाता है इस प्रकार से अतिक्रमण, विचलन कहा जाता है। रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव के शब्दों में कहें तो "सामान्य भाषा के समान भाषिक नियमों के इस अतिक्रमण को ही विचलन कहा जाता है।"[20] विचलन के निम्नलिखित स्तर हैं–

i. **ध्वनि विचलन**–जहाँ मानक ध्वनियों के स्थान पर अन्य विचलित ध्वनियों का प्रयोग किया जाता है वहाँ ध्वनि विचलन होता है जो कि सामान्य प्रयोग से भिन्न होती हैं। कहानी गुलरा के बाबा में इसका प्रयोग खूब हुआ है। "कवन है रे वह सरपत काट रहा।"[21] यहाँ पर 'कौन है' तथा 'वहाँ' के स्थान पर क्रमशः 'कवन है' तथा 'वह' ध्वनियों का विचलित प्रयोग हुआ है।

ii. **शब्द विचलन**–अपनी रचना में लालित्य लाने के लिए रचनाकार नए–नए शब्दों को तरासता है जो कि विचलन का भी रूप हो सकता है, यथा–"भौजी ने मेरी सिलिक की कमीज रद्द कर दी। नन्हकुआ मुस्कराता जा रहा था और हाथ से कमीज सुखा रहा था।"[22] यहाँ पर सिलिक, सिल्क का तथा नन्हकुआ, नन्हकू का विचलित रूप है। यहाँ यदि लेखक मानक शब्दों सिल्क और नन्हकू का ही प्रयोग करता तो भौजी और नन्हकू की वह गवईं नोक–झोंक उतना अच्छा नहीं बनता जितना अच्छा इन विचलित शब्दों के प्रयोग से हुआ है।

iii. **क्रम विचलन**–वाक्य क्रम के विचलन से कहीं–कहीं गंभीरता तथा विशेषता आ जाती है। कथ्य में विशेषता लाने के लिए लेखक द्वारा इस प्रकार का क्रम विचलन किया जाता है। उदाहरण–"यह जुम्मिस भी नहीं खा रही है बाबा।"[23] यहाँ पर वाक्य के नियम के हिसाब से बाबा शब्द संज्ञा है जो कि वाक्य के शुरू में ही आना चाहिए लेकिन बाबा शब्द पर जोर देने के लिए उसे क्रम विचलन द्वारा सबसे बाद में रखा गया है।

iv. मुहावरा विचलन– इस आलोच्य कहानी में मुहावरा विचलन का भी प्रयोग हुआ है यथा– "बाबा जैसे भौचक्के से हो गए।"[24] यहाँ मानक मुहावरा 'भौचक्का होना' का प्रयोग विचलन है। जिससे बाबा को जैसे शॉक लगने और उनकी भाव भंगिमा का वर्णन करने में सफलता मिली है।

समानांतरता–समानांतरता शब्द अंग्रेजी के 'पैरेललिज्म' के पर्याय के रूप में हिंदी में प्रयुक्त होता है। इसके प्रस्तुतकर्ता रोमन याकोब्सन हैं। समानांतरता ध्वनि स्तर पर, शब्द स्तर पर, वाक्य आदि स्तरों पर होती है।

i. **ध्वनि स्तरीय समानांतरता**– भाषा की सबसे छोटी इकाई ध्वनि या अच्छरों में एक या अनेक ध्वनियों या व्यंजनों की आवृत्ति एक बार या अनेक बार हो तो वहाँ ध्वनि स्तरीय समानांतरता होती है। गुलरा के बाबा कहानी में समानांतरता भी देखने को मिलता है जैसे–"आवाज सारी गुलरा में गूँज गई। बड़ी गंभीर और बड़ी बुलंद आवाज थी वह; अनजान आदमी तो एक बार डर जाए और चिरई चुरमुन भी पेड़ों पर से उड़ पड़ें।"[25] यहाँ पर सारी, गयी, बड़ी, थी, आदि शब्दों में ई ध्वनि की बार–बार समानांतरता हुई है। इसी तरह च और ड़ ध्वनियों की भी समानांतरता हुई है। एक और अच्छा उदाहरण भी दृष्टव्य है–"फागुन के दूसरे पखवाड़े के थोड़े दिन बाकी थे दिन को सुनहरी धूप शाम को अबीरी आकाश और रात को रुपहली टटकी चाँदनी– खलिहान जौ गेहूँ के डाँठ से खचाखच भरे हुए।"[26] इस उदाहारण में ए, र, ई, च, ध्वनियों

की समानांतरता हुई है। इसी तरह पूरी कहानी में जगह–जगह ध्वनियों, वर्णों की समानांतरता देखने को मिलती है। ध्वनि समानांतरता के बाद स्थान आता है शब्दीय समानांतरता का।

ii. **शब्दीय समानांतरता**–जहाँ पर किसी शब्द विशेष को बार–बार दोहराया जाए वहाँ शब्दीय समानांतरता होती है। गुलरा के बाबा कहानी में शब्दीय समानांतरता भी यत्र–तत्र दिखाई देता है। "गुलरा की इस आमों की बगिया का एक–एक जीव, एक–एक पत्ता बाबा के इस गर्जन से परिचित हैं। क्यों ना हों, बाबा रात दिन इन्हीं पेड़ों की सेवा सत्कार में तो लगे रहते हैं।"[27] यहाँ पर 'एक–एक' तथा 'बाबा' शब्द की आवृत्ति से शब्दीय समानांतरता उपस्थित हुआ है। इसी तरह का एक और उदाहारण प्रस्तुत है–"बड़ा बुरा किया राम–राम कुनरू जैसे गाल इतने जोर से मलने के लिए थोड़े ही हैं। रामदीन खाँसते हुए बोले और खटिया पर करवट बदल ली। पारस ने मुंह बनाते हुए जवाब दिया बुढ़ापा आ गया, लेकिन लत न छूटी मरते–मरते जीभ में कीड़े पड़ जायेंगे बाबा, अब तो मान जाओ आखिरी समा में।"[28] यहाँ पर राम–राम तथा मरते–मरते शब्दों की आवृत्ति होने से शब्दीय समानांतरता का प्रयोग हुआ है।

iii. **वाक्य स्तरीय समानांतरता–** इस आलोच्य कहानी गुलरा के बाबा में एकाध जगह वाक्य स्तरीय समानांतरता भी देखने को मिलती है यथा–"दिन को सुनहली धूप, शाम को अबीरी आकाश और रात को रुपहली टटकी चाँदनी।"[29] यहाँ पर दिए गए यह वाक्य अपूर्ण ही सही लेकिन इन वाक्यों से वाक्य स्तरीय समानांतरता प्रस्तुत हुआ है।

अप्रस्तुत विधान–अप्रस्तुत विधान को सीधे तौर पर कहे तो जो हमारी आँखों के सामने है, वह प्रस्तुत है और जो आँखों के सामने नहीं है अर्थात जिसकी कल्पना की जाए वह अप्रस्तुत है। अप्रस्तुत विधान के बारे में शैली वैज्ञानिक भोलानाथ तिवारी का मानना है कि, "इस तरह साहित्य में अप्रस्तुत का प्रयोग प्रस्तुत का वर्णन करने के लिए एक शैलीय उपकरण के रूप में करते हैं।"[30] विवेच्य कहानी में अप्रस्तुत विधान का वर्णन करने में भी लेखक पीछे नहीं रहा है। उदाहरण के तौर पर देखें तो "फिर भी कर्ज तो है वह कहकर मुस्कुराई, एक मोह भरी मुस्कान की रोशनी बिखर गयी।"[31] यहाँ पर प्रस्तुत चमेलिया की मुस्कान की तुलना अप्रस्तुत रोशनी से की गई है जो कि चमेलिया के मुस्कान को पाठक के मन मस्तिष्क में और भी प्रदीप्त करता है। इसी तरह एक दूसरे अप्रस्तुत को कहानी लेखक ने बड़ी सुंदरता पूर्वक प्रस्तुत किया है–"बड़ा बुरा किया राम–राम कुनरू ऐसे गाल इतने जोर से मलने के लिए थोड़े ही हैं। रामदीन खाँसते हुए बोले और खटिया पर करवट बदल ली।"[32] यहाँ पर जिताबो भौजी के सुंदर एवं लाल गाल की तुलना लेखक ने कुनरू जैसे एक मुलायम फल से की है, जो लेखक के अप्रस्तुत वर्णन की कुशलता को दर्शाता है। कहानी के अंत में लेखक ने मानवीकरण अलंकार का प्रयोग करते हुए बड़े ही सुंदर तरीके से अप्रस्तुत का वर्णन किया है–"बड़े सबेरे जब पलासों की लाली पर सूरज की किरणें एक–एक कर उतर रही थीं।"[33] यहाँ सूरज के किरणों को लेखक पलाश के फूलों पर ऐसे उतार रहा है जैसे कोई नायिका उतर रही है।

इस प्रकार कथाकार मार्कण्डेय की चर्चित कहानी गुलरा के बाबा के शैलीवैज्ञानिक अध्ययन के विभिन्न स्तरों से यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक की कहानी सर्जनात्मक साहित्य की गरिमा बन गई है। इस कहानी में लेखक ने भाषा एवं शैली का बोझिल रूप कहीं भी उपस्थित नहीं होने दिया है। कहानी के आकर्षक प्रस्तुति के कारण उनकी शैली और भाव प्रेषणीयता इतनी सरस और प्रभावोत्पादक बन गई है कि उनके पाठक भाव विभोर हो जाते हैं। अंततः हम कह सकते हैं कि आलोच्य कहानी गुलरा के बाबा शैलीविज्ञान के विविध स्तरों पर एकदम खरी उतरती है जो कि लेखक की अपनी एक प्रभावोत्पादक शैलीय विशेषता है।

संदर्भ–

1. संपादक, चतुर्वेदी द्वारका प्रसाद शर्मा, संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ, पृ. 112
2. डॉ. विद्यानिवास मिश्र, रीति विज्ञान, पृ. 14
3. डॉ. नगेंद्र, शैलीविज्ञान, पृ. 5
4. डॉ. भोलानाथ तिवारी, शैलीविज्ञान, पृ. 18
5. डॉ. सुरेश कुमार, शैलीविज्ञान पृ. 46
6. डॉ. भोलानाथ तिवारी, शैली विज्ञान, पृ. 21
7. डॉ. शशिभूषण शीतांशु, भारती की काव्य भाषा, पृ. 42
8. मार्कण्डेय, मार्कण्डेय की कहानियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2010, पृ. 5, 6
9. वही, पृ. 5
10. वही, पृ. 5
11. वही, पृ. 6
12. वही, पृ. 6
13. वही, पृ. 7

14. वही, पृ. 7
15. वही, पृ. 7
16. वही, पृ. 6
17. वही, पृ. 8
18. वही, पृ. 4
19. वही, पृ. 3
20. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, संरचनात्मक शैलीविज्ञान, आलेख प्रकाशन 1979, पृ. 49
21. मार्कण्डेय, मार्कण्डेय की कहानियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2010, पृ. 3
22. वही, पृ. 4
23. वही, पृ. 7
24. वही, पृ. 8
25. वही, पृ. 3
26. वही, पृ. 4
27. वही, पृ. 3
28. वही, पृ. 5
29. वही, पृ. 4
30. भोलानाथ तिवारी, शैली विज्ञान, शब्दकार प्रकाशन, दिल्ली 1997, पृ. 114
31. मार्कण्डेय, मार्कण्डेय की कहानियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद 2010, पृ. 6
32. वही, पृ. 5
33. वही, पृ. 9